प्रधानमंत्री **द्वारा** जर्मनी में भारतीय समुदाय के लोगों को **सम्बोधन**

दिनांक 24 अप्रैल, 2006
बर्लिन, जर्मनी

"मुझे जर्मनी में भारतीय समुदाय के लोगों के बीच उपस्थित होकर प्रसन्नता हो रही है।

आप लोगों ने अपनी प्रतिभा, अपनी सृजनशीलता और उद्यमशीलता तथा अंतरंग भारतीय मूल्यों को त्यागे बिना विदेशी संस्कृति और मूल्यों में अपने आपको रचा-बसा कर एक अद्वितीय सम्मान अपने लिए हासिल किया है। इससे आप सभी लोग भारत के ऐसे राजदूत बन गए हैं, जो अपने सहकर्मियों, अपने पड़ोसियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों में भारत के प्रति एक अच्छी अवधारणा पैदा करेंगे। हम जर्मनी में भारत के बारे में बेहतर सूझबूझ पैदा करने में आपके योगदान की सराहना करते हैं। आपमें अपने पूर्वजों की भूमि के बारे में जो प्यार और सम्मान है, मैं उसकी सराहना करता हूँ।

भारत और जर्मनी सामरिक साझीदार हैं। जर्मनी भारत में छठा सबसे बड़ा निवेशक है और यूरोप में भारत के साथ व्यापार करने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश है। भारत और जर्मनी के संयुक्त उद्यम कई क्षेत्रों में बाजार में अग्रणी हैं। दोनों देशों के बीच काफी लम्बे समय से तकनीकी और प्रौद्योगिकी सहयोग कायम है। दोनों देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधारों के बारे में मिलकर काम कर रहे हैं।

भारत के लिए जर्मनी में यह एक अद्वितीय वर्ष है। हम हनोवर व्यापार मेले में एक साझेदार देश हैं और फ्रेंकफर्ट पुस्तक मेले में आतिथ्य देश हैं। मई के महीने में बोन द्विवार्षिक आयोजन में भारत एक प्रमुख देश के रूप में शामिल हो रहा है। इन सभी महत्वपूर्ण मेलों में भारत ही एक ऐसा देश है, जिसे दूसरी बार शामिल होने का यह सम्मान मिला है। जर्मनी के कई शहर भारत में विशेष समारोह आयोजित करेंगे, इससे भारत के बारे में पैदा हुई जबर्दस्त अभिरुचि का पता लगता है और मुझे विश्वास है कि इन सभी आयोजनों से जर्मनी और भारत के लोग एक दूसरे के और नजदीक आएंगे।

भारत आज प्रगति की ओर अग्रसर है। आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में स्थायी आधार पर विकास की ऊंची दर बनी हुई है। भारत कारोबार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वाधिक आकर्षक स्थल बन गया है। कई भारतीय कम्पनियों ने जर्मनी सहित दुनिया के विभिन्न देशों में अपनी अन्तर्राष्ट्रीय मौजूदगी बढ़ाई है।

आज, विदेशों में हमारी मजबूत आर्थिक पहचान बनी है, जो निवेशकों को, चाहे देश में हों या विदेश में सुरक्षा का भरोसा दिलाती है। पिछले दो सालों से हमारी अर्थव्यवस्था प्रतिवर्ष लगातार 8 फीसदी की दर से बढ रही है। हमें विश्वास है कि हम देश की इस वार्षिक विकास दर को 9 से 10 फीसदी तक ले जा सकेंगे। हमारा विश्वास इस तथ्य पर आधारित है कि हमारी बचत दर अब सकल घरेलू उत्पाद के 29 फीसदी से ऊपर जा चुकी है और निवेश दर सकल घरेलू उत्पाद के 31 फीसदी के आसपास है। निवेश, बैंकिंग, वित्त और पूंजीगत बाजार से संबंधित हमारी नीतियां इस प्रकार विकसित हुई हैं कि जिससे भारतीय उद्योग और उद्यम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनते जा रहे हैं। हमने ग्रामीण नवीनीकरण के लिए एक विशाल कार्यक्रम शुरू किया है, इससे गांवों में मौजूद बुनियादी सुविधाओं में सुधार आएगा और इसके फलस्वरूप आय बढ़ेगी तथा घरेलू बाजार का विस्तार होगा। हमने देश में सड़क व्यवस्था, रेल व्यवस्था, बन्दरगाहों, हवाई अड्डों, बिजली उत्पादन और सम्पूर्ण शहरी बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए नई नीतियां बनाई हैं।

मुझे विश्वास है कि भारत आज जिस परिवर्तन की स्थिति से गुजर रहा है वह इस देश में सबसे ज्यादा उत्साहजनक है, क्योंकि इसके जरिए एक अरब देशवासी प्रगति और समृद्धि की ओर अग्रसर होंगे।

मैं आज हनोवर से बर्लिन आया हूँ, जहां हनोवर मेले 2006 में 300 से अधिक कम्पनियों के साथ भारत की भागीदारी के जरिए व्यापार, निवेश तथा परस्पर फायदों के लिए प्रौद्योगिकी सहयोग के वास्ते भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था में साझेदारी के लिए मौजूद विशाल क्षमताओं का प्रदर्शन किया जाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 22 सालों में दूसरी बार साझीदार देश के रूप में इस मेले में भारत को शामिल होने का जो सम्मान मिला है, उससे भारत और जर्मनी के बीच द्विपक्षीय रिश्ते और प्रगाढ होंगे।

कहा जाता है कि इस नई वैश्विकृत दुनिया में वो ही समाज सबसे ज्यादा फायदे की स्थिति में होंगे जो तथाकथित अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के रूप में ढल गए हैं। मेरा मानना है कि अन्तर्राष्ट्रीकरण की यह ऐतिहासिक परियोजना तब तक अधूरी रहेगी जब तक यह भारतीय मूल के लोगों तक नहीं पहुंच पाते। हमारे अनिवासी भारतीय तथा भारतीय मूल के लोग अन्तर्राष्ट्रीकरण की हमारी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण साझीदार हैं। इसलिए, मैं आप सभी को आमंत्रण देता हूँ कि आप एक नए आधुनिक और समृद्ध भारत के निर्माण की इस उत्साहजनक यात्रा में शामिल हों।"